

संपादकीय (उमेश कुमार तिवारी)

सनातन ने शक्ति के साथ करुणा को जरूरी माना

भारतीय सनातन संस्कृति में नवरात्रि केवल देवी की उपासना का पर्व नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, साधना और शक्ति के जागरण का महापर्व भी है। ये नौ रात्रियां मनुष्य को बाहरी आडंबरों से ऊपर उठकर अपने अंतर्मन में झांकने, विकारों पर विजय प्राप्त करने और जीवन को धर्ममय बनाने की प्रेरणा देती हैं। मां दुर्गा की आराधना हमें स्मरण कराती है कि जब-जब धरती पर अधर्म, अन्याय और आसुरी प्रवृत्तियां बढ़ती हैं, तब-तब धर्म और शक्ति का जागरण ही उनके पराभव का मार्ग प्रशस्त करता है। नवरात्रि में देवी के नौ स्वरूप शक्ति के नौ आयामों का बोध कराते हैं। मां शैलपुत्री दृढ़ता और स्थिरता, ब्रह्मचारिणी तप और संयम, चंद्रघंटा साहस, कूष्मांडा सृजनात्मक ऊर्जा, स्कंदमाता ममत्व और संरक्षण, कात्यायनी अन्याय के प्रतिकार, कालरात्रि निर्भयता, महागौरी पवित्रता और सिद्धिदात्री पूर्णता की प्रतीक हैं। इन स्वरूपों का आध्यात्मिक अर्थ अत्यंत गहरे हैं। वे हमें सिखाते हैं कि जीवन में केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं होता, उसके साथ साहस भी चाहिए; केवल शक्ति पर्याप्त नहीं होती, उसके साथ करुणा भी बेहद आवश्यक है। तप, विवेक, धैर्य, निर्भयता और पवित्रता के समन्वय से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। शक्ति की उपासना और नारी के सम्मान में गहरा नाता है। सनातन धर्म में शक्ति को सृष्टि की मूल चेतना माना गया है। शिव और शक्ति का संबंध इसी सत्य का उद्घोष करता है कि चेतना और ऊर्जा एक-दूसरे के पूरक हैं। नवरात्रि हमें नारी को केवल पूजनीय मानने का नहीं, बल्कि उसके सम्मान, सुरक्षा, शिक्षा, स्वावलंबन और गरिमा को प्रतिष्ठित करने का संदेश भी देती है। इसीलिए, कन्या-पूजन की सार्थकता तभी है, जब हमारे समाज की प्रत्येक बालिका को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षित वातावरण प्राप्त हो। जिस समाज में स्त्री की प्रतिभा का सम्मान होता है और उसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलती है, वही समाज वास्तव में शक्ति-संपन्न बनता है। देवी की आराधना का सच्चा फल तभी प्राप्त होगा, जब हमारे आचरण में मातृ-शक्ति के प्रति श्रद्धा और संवेदनशीलता दिखाई देगी। नवरात्रि की प्रासंगिकता आज कहीं अधिक है। आज का मनुष्य अनेक प्रकार के तनाव, असंतोष, प्रतिस्पर्धा और नैतिक चुनौतियों से घिरा हुआ है। चकित करने वाली तकनीकी प्रगति के बावजूद जीवन में शांति, संयम और आत्मिक संतुलन की आवश्यकता बनी हुई है। ऐसे समय में नवरात्रि का संदेश और प्रासंगिक हो जाता है। यह व्रत हमें इंद्रिय संयम सिखाता है, मंत्र-जप हमारे मन को एकाग्र करता है और साधना आत्मालोकन का अवसर प्रदान करती है। देवी महिषासुरमर्दिनी का स्वरूप हमें यह संदेश देता है कि वास्तविक संघर्ष केवल बाहरी बुराइयों से नहीं, बल्कि आंतरिक अहंकार, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या और अन्यायपूर्ण प्रवृत्तियों से भी है। इन विकारों पर विजय प्राप्त किए बिना आध्यात्मिक उन्नति संभव नहीं है। धर्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं है, बल्कि सत्य, करुणा, सेवा और कर्तव्यनिष्ठा को जीवन का आधार बनाना है। सनातन में साधना का सेवा और समाज कल्याण से गहरा नाता है। नवरात्रि का एक महत्वपूर्ण पक्ष लोकमंगल है। भूखे को भोजन, जरूरतमंद को सहायता, असहाय को संबल और दुखी को सांतवना देना भी देवी की आराधना का व्यावहारिक स्वरूप है। धार्मिक अनुष्ठानों के साथ यदि हम समाज के वंचित वर्गों के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं, तो हमारी साधना अधिक सार्थक होगी। नवरात्रि भारत की सांस्कृतिक विविधता में एकता का अद्भुत सूत्र है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में देवी की उपासना की अलग-अलग परंपराएं हैं, किंतु श्रद्धा का केंद्र एक ही आदिशक्ति हैं। यह विविधता में एकता की उस सनातन भावना को प्रकट करती है, जो भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इसलिए नवरात्रि को केवल नौ दिनों का उत्सव न मानें, बल्कि इसे आत्म-परिष्कार और जीवन-परिवर्तन का संकल्प बनाएं। हमारे भीतर सद्बुद्धि, साहस, करुणा और धर्मनिष्ठा का जागरण ही मां दुर्गा की कृपा का वास्तविक अनुभव है। व्यक्ति भीतर की आसुरी प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर लोकमंगल के मार्ग पर चलता है, तभी नवरात्रि की साधना पूर्णता को प्राप्त होती है।

नई दिल्ली

जंतर-मंतर से दूर होते प्रतिरोध के ठिकाने

लोकतंत्र की जीवंतता केवल इस बात से तय नहीं होती कि संसद के भीतर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच कितनी सार्थक बहस होती है, बल्कि इसकी असली कसौटी यह है कि संसद के बाहर सड़कों पर आम नागरिक की आवाज को कितनी गंभीरता और सहजता से सुना जाता है। देश की राजधानी नई दिल्ली के हृदय स्थल में स्थित जंतर मंतर पिछले 33 वर्षों से इसी लोकतांत्रिक चेतना, जन आक्रोश और नागरिक उम्मीदों का सबसे बड़ा केंद्र रहा है। किंतु अब केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा गठित एक उच्चस्तरीय समिति की सिफारिशों के आधार पर दिल्ली पुलिस ने एक ऐतिहासिक बदलाव करते हुए जंतर मंतर को अधिकृत प्रदर्शन स्थलों की सूची से बाहर कर दिया है। 28 अप्रैल 2022 के पुराने स्थायी आदेश में संशोधन करते हुए अब राजधानी में धरना और प्रदर्शन के लिए तीन नए स्थान निर्धारित किए गए हैं, जिनमें मध्य दिल्ली का रामलीला मैदान, उत्तरी दिल्ली का बुराड़ी मैदान और पूर्वी दिल्ली के कड़कड़मा स्थित व्यावसायिक केंद्र मैदान शामिल हैं। प्रशासन के इस एक निर्णय ने तीन दशकों से चली आ रही प्रतिरोध की एक पूरी परंपरा को विराम दे दिया है और साथ ही लोकतांत्रिक अधिकारों तथा प्रशासनिक व्यवस्था के बीच के द्वंद्व पर एक नई बहस छेड़ दी है। जंतर मंतर का यह परिसर केवल 18वीं सदी के खगोलीय यंत्रों का स्मारक मात्र नहीं था, बल्कि यह आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों की सबसे बड़ी प्रयोगशाला बन चुका था। वर्ष 1993 से लेकर 2026 तक के अपने 33 वर्षों के

सफर में इस छोटे से मार्ग ने अनगिनत ऐतिहासिक बदलावों की नींव रखी। चाहे वर्ष 2011 का भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल आंदोलन हो, वर्ष 2012 में निर्भया कांड के बाद उमड़ा युवाओं का स्वतःस्फूर्त जनसैलाब हो, वर्ष 2015 में पूर्व सैनिकों का वन रैंक वन पेंशन आंदोलन हो या फिर वर्ष 2023 में महिला पहलवानों का लंबा संघर्ष, जंतर मंतर ने हर वर्ग की पीड़ा को राष्ट्रीय पटल पर रखने का मंच प्रदान किया। देश के सुदूर कोनों से आने वाले किसानों, मजदूरों, छात्रों, शिक्षकों और वंचित वर्गों के लिए यह स्थान एक ऐसी उम्मीद की तरह था, जहाँ खड़े होकर वे सीधे सत्ता के शीर्ष से संवाद करने का अहसास पाते थे। संसद भवन से मात्र 1 से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर होने के कारण यहाँ उठने वाली हर आवाज की गुंज नीति निर्माताओं के कानों तक आसानी से पहुँच जाती थी। इस ऐतिहासिक स्थल से प्रदर्शनों को हटाने के पीछे प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों के अपने ठोस तर्क हैं। तात्कालिक कारणों पर नजर डालें तो वर्ष 2026 के जून और जुलाई माह में प्रतियोगी परीक्षाओं की शुचिता और शिक्षा सुधारों की मांग को लेकर लगभग 36 दिनों तक चला विशाल छात्र आंदोलन इस फैसले का मुख्य आधार बना। उस आंदोलन के दौरान जंतर मंतर की सीमित क्षमता के विपरीत 1 लाख से अधिक प्रदर्शनकारी जुट गए थे। जब इस भारी भीड़ ने संसद भवन की ओर कूच करने का प्रयास किया, तो सुरक्षा व्यवस्था चरमरा गई और पुलिस तथा छात्रों के बीच हुई झड़पों में 118 पुलिसकर्मियों सहित दर्जनों छात्र

घायल हुए। इसके अतिरिक्त, हाल ही में मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन के मुद्दे पर राजनीतिक दलों और युवा संगठनों द्वारा फिर से जंतर मंतर पर बड़े घेराव की तैयारी की जा रही थी। नए संसद भवन और कर्तव्य पथ के आसपास अति विशिष्ट व्यक्तियों के निरंतर आवागमन और संवेदनशील मंत्रालयों की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस का मानना है कि इतनी कम दूरी पर अनियंत्रित भीड़ का जुटना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ा जोखिम है। सुरक्षा के अलावा स्थानीय व्यापारियों और आम नागरिकों की दैनिक परेशानियां भी इस बदलाव का एक बड़ा कारण बनी हैं। जंतर मंतर राजधानी के सबसे बड़े व्यावसायिक केंद्र कर्नाट प्लेस और जनपथ के ठीक बगल में स्थित है। जब भी यहाँ रोक बड़ा प्रदर्शन होता था, तो एहतियात के तौर पर आसपास की मुख्य सड़कें और रेल के भूमिगत स्टेशन बंद कर दिए जाते थे। इससे न केवल घंटों लंबा यातायात जाम लगता था, बल्कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे की ओर जाने वाले हजारों यात्रियों की गाड़ियां छूट जाती थीं। स्थानीय व्यापार मंडलों ने लंबे समय से यह शिकायत की थी कि लगातार होने वाले धरनों और नाकेबंदी के कारण कर्नाट प्लेस के व्यापार को करोड़ों रुपये के राजस्व का नुकसान हो रहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी पूर्व में यह सुझाव दिया था कि प्रदर्शनों के लिए ऐसी खुली और बड़ी जगह तलाशी जानी चाहिए जहाँ आम जनजीवन प्रभावित न हो तथा प्रदर्शनकारियों के लिए पेयजल, शौचालय और चिकित्सा जैसी बुनियादी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध कराई जा सकें। किंतु इस

प्रशासनिक सुविधा के दूसरे पहलू पर नजर डालें तो नागरिक अधिकार संगठनों और संविधानविदों की चिंताएं अत्यंत गंभीर और विचारणीय हैं। राजधानी में सत्ता के केंद्र से जन आंदोलनों को दूर धकेलने की यह प्रवृत्ति नई नहीं है, बल्कि पिछले चार दशकों में विरोध का पता तीन बार बदला जा चुका है। वर्ष 1988 तक इंडिया गेट के पास स्थित बोट क्लब देश के सबसे बड़े प्रदर्शनों का केंद्र हुआ करता था, जहाँ से संसद और राष्ट्रपति भवन सीधे दिखाई देते थे। अक्टूबर 1988 में चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में जब 5 लाख किसानों ने एक सप्ताह तक बोट क्लब पर डेरा डाला, तो सरकार ने सुरक्षा और व्यवस्था का हवाला देकर वहां प्रदर्शनों पर स्थायी रोक लगा दी और वर्ष 1993 में जंतर मंतर को नया विकल्प बनाया गया। वर्ष 2017 में राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने पर्यावरण और ध्वनि प्रदूषण के नियमों का हवाला देकर जंतर मंतर पर भी आंशिक पाबंदियां लगाईं, और अब वर्ष 2026 में इसे पूरी तरह से सूची से हटा दिया गया है। बोट क्लब से जंतर मंतर और अब जंतर मंतर से बुराड़ी तथा कड़कड़डूमा के मैदानों तक का यह सफर वास्तव में सत्ता के गलियारों से आम जनता की भौतिक और मनोवैज्ञानिक दूरी बढ़ने की कहानी है। लोकतंत्र में किसी भी शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का मूल उद्देश्य सरकार का ध्यान आकर्षित करना और राष्ट्रीय समाचार माध्यमों के जरिए अपनी बात देश के सामने रखना होता है। जंतर मंतर की भौगोलिक स्थिति उसे यह विशेष महत्व देती थी कि वहां बैठा सी लोगों का एक छोटा समूह भी राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन जाता था। इसके

विपरीत, उत्तरी दिल्ली का बुराड़ी मैदान या पूर्वी दिल्ली का कड़कड़डूमा क्षेत्र मुख्य प्रशासनिक केंद्र से 15 से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। बाहरी इलाकों में प्रदर्शनों को स्थानांतरित करने से प्रशासन को भीड़ प्रबंधन में तो आसानी होगी, लेकिन इससे जन आंदोलनों की दृश्यता और प्रभावशीलता कम होने का पूरा अंदेशा है। जब विरोध की आवाज सत्ता के केंद्र से बहुत दूर किसी कोने में सिमट जाती है, तो उसकी अनदेखी करना तंत्र के लिए बहुत आसान हो जाता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(क) और 19(1)(ख) देश के प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा शांतिपूर्ण और निशस्त्र सम्मेलन करने का मौलिक अधिकार प्रदान करता है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी वर्ष 2018 के मजदूर किसान शक्ति संगठन बनाम भारत संघ मामले में स्पष्ट रूप से कहा था कि कानून व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर नागरिकों के विरोध करने के अधिकार को पूरी तरह से निष्प्रभावी या अर्थहीन नहीं बनाया जा सकता। शासन का यह दायित्व है कि वह सुरक्षा और नागरिक स्वतंत्रता के बीच एक स्वस्थ संतुलन कायम करे। यदि सुरक्षा चुनौतियों और शहरी यातायात के दबाव के कारण जंतर मंतर से प्रदर्शनों को हटाना अपरिहार्य ही था, तो सरकार और प्रशासन को यह सुनिश्चित करना होगा कि रामलीला मैदान, बुराड़ी और कड़कड़डूमा के नए स्थलों पर आने वाले नागरिकों की आवाज अनसुनी न रहे। लोकतंत्र की गरिमा इसी में है कि प्रदर्शन का मैदान भले ही बदल जाए, लेकिन जनता की पीड़ा को सुनने की सत्ता की संवेदनशीलता कभी कम न हो।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने बढ़ाई भारत की विकास दर

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा वित्तीय वर्ष 2026–27 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर के अनुमान को 6.4 प्रतिशत से बढ़ाकर 7 प्रतिशत करना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक अत्यंत उत्साहवर्धक और सकारात्मक संकेत है। वैश्विक पटल पर जब कई बड़ी और विकसित अर्थव्यवस्थाएं मंदी, महंगाई और अस्थिरता के दौर से गुजर रही हैं, तब भारत की विकास दर में इस तरह का सकारात्मक संशोधन देश की आर्थिक नीतियों और मजबूत आधारभूत संरचना की सफलता को प्रमाणित करता है। यह केवल एक संख्यात्मक वृद्धि नहीं है, बल्कि यह विश्व समुदाय के उस अटूट भरोसे का प्रतीक है जो उसने भारत की आर्थिक संभावनाओं पर जताया है। सात प्रतिशत की यह जादुई विकास दर भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की सूची में सबसे ऊपर रखती है और यह स्पष्ट करती है कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद देश का आर्थिक पहिया तेज गति से घूम रहा है। इस शानदार आर्थिक वृद्धि के पीछे सबसे बड़ा कारण देश की अपनी मजबूत घरेलू मांग है। पश्चिमी देशों की तरह भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह से केवल निर्यात पर निर्भर नहीं है, बल्कि यहां का विशाल मध्यवर्ग और उसकी उपभोग क्षमता अर्थव्यवस्था को एक मजबूत ढाल प्रदान करती है। जब वैश्विक बाजारों में मांग कम होती है, तब देश के भीतर की खपत उत्पादन को गिरने नहीं देती। पिछले कुछ

वर्षों में लोगों की क्रय शक्ति में जो सुधार आया है, उसने बाजार में उत्पादों और सेवाओं की मांग को निरंतर बनाए रखा है। यह घरेलू मांग ही है जिसके कारण छोटे से लेकर बड़े उद्योगों तक का चक्र सुचारु रूप से चल रहा है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में खपत बढ़ने से विनिर्माण और खुदरा व्यापार को भारी लाभ मिल रहा है, जो अंततः सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों में परिलक्षित हो रहा है। घरेलू मांग के साथ ही सेवा क्षेत्र इस विकास यात्रा का एक बहुत महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है। भारत का सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं, स्वास्थ्य और शिक्षा, न केवल देश के भीतर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी धाक जमा रहा है। तकनीक के निरंतर विस्तार और नवाचार ने भारतीय उद्यमों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने योग्य बनाया है। वित्तीय सेवाओं के आधुनिकीकरण और लेनदेन की नई तकनीकों प्रणालियों ने भी व्यापार को आसान और पारदर्शी बनाया है। सेवा क्षेत्र का लगातार विस्तार न केवल विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ा रहा है, बल्कि यह लाखों युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर रहा है। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती पैठ उसे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर रही है। सरकार द्वारा बुनियादी ढांचे के विकास पर किया जा रहा भारी पूंजीगत व्यय भी इस सात प्रतिशत की वृद्धि का एक प्रमुख वाहक है। नई सड़कों, राजमार्गों, रेलवे मार्गों, हवाई अड्डों और बंदरगाहों के

निर्माण से न केवल देश के विभिन्न हिस्से आपस में बेहतर तरीके से जुड़ रहे हैं, बल्कि इससे माल ढुलाई और व्यापार की लागत में भी भारी कमी आ रही है। बुनियादी ढांचे पर खर्च किया गया धन अर्थव्यवस्था में कई गुना अधिक प्रभाव डालता है। इससे निर्माण सामग्री उद्योगों को सीधा लाभ मिलता है और दिखाड़ी मजदूरों से लेकर तकनीकी विशेषज्ञों तक हर स्तर पर रोजगार का सृजन होता है। सरकार की यह दूरदर्शी सोच अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक मजबूती प्रदान कर रही है, जिससे भविष्य में विकास की रफ्तार को और भी तेज किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त विनिर्माण क्षेत्र में जान फूंकने के लिए लागू की गई उत्पादन आधारित प्रोत्साहन जैसी योजनाओं का भी सकारात्मक असर दिखने लगा है। देश को वैश्विक विनिर्माण का केंद्र बनाने की दिशा में यह एक बड़ा कदम है। अब संचार उपकरणों से लेकर रक्षा सामग्री और बिजली से चलने वाले उपकरणों तक का निर्माण बड़े पैमाने पर देश के भीतर ही हो रहा है। इससे आयात पर निर्भरता कम हो रही है और व्यापार घाटा भी सुधर रहा है। जब देश में नई औद्योगिक इकाइयां लगती हैं, तो वे अपने साथ कुशल और अकुशल दोनों तरह के कामगारों के लिए आजीविका लेकर आती हैं। युवाओं को रोजगार मिलने से उनकी आमदनी बढ़ती है, जिससे वे बाजार में अधिक पैसा खर्च करते हैं, और यह चक्र पूरी अर्थव्यवस्था को लगातार गति प्रदान करता है। भारत जैसे विशाल

देश में असली आर्थिक विकास तब तक संभव नहीं है जब तक कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यधारा के साथ पूरी तरह से कदम मिलाकर न चले। कृषि और उससे जुड़े उद्योगों का देश के सकल घरेलू उत्पाद में बहुत बड़ा योगदान है। अच्छी उपज और बेहतर समर्थन मूल्य के कारण ग्रामीण आय में जो वृद्धि दर्ज की गई है, उसने कृषि उपकरणों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मांग को तेज किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ता उपभोग इस बात का संकेत है कि विकास का लाभ केवल शहरों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के निचले पायदान तक भी पहुंच रहा है। आर्थिक समावेशन की यह प्रक्रिया विकास को अधिक टिकाऊ और संतुलित बनाती है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के इस नए अनुमान का सीधा असर विदेशी निवेशकों की मानसिकता पर भी पड़ेगा। दुनिया भर के निवेशक हमेशा ऐसे बाजारों की तलाश में रहते हैं जहां उन्हें स्थिरता, सुरक्षा और उच्च लाभ की गारंटी मिल सके। जब एक शीर्ष वैश्विक संस्था भारत की विकास दर को बढ़ाती है, तो यह निवेशकों के लिए एक स्पष्ट संकेत होता है कि भारत निवेश के लिए सबसे सुरक्षित और लाभदायक स्थान है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के बढ़ने से देश में नई तकनीक आती है, उत्पादन क्षमता का विस्तार होता है और वैश्विक बाजारों तक हमारी पहुंच आसान हो जाती है। इसके साथ ही, देश के प्रतिभूति बाजारों में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जिससे आम निवेशकों की संपत्ति में भी

इजाफा होता है। हालांकि, इस उच्च विकास दर के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं, जिन पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। मुद्रास्फीति यानी महंगाई दर को नियंत्रित रखना सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक है। यदि वस्तुओं और सेवाओं के दाम तेजी से बढ़ते हैं, तो वह आम आदमी की क्रय शक्ति को कम कर देता है, जिससे अंततः घरेलू मांग प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा, वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव, जैसे युद्ध और आपूर्ति श्रृंखला में आने वाली बाधाएं, कच्चे तेल और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को अस्थिर कर सकते हैं। कृषि क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन और अनियमित मौसम का प्रभाव भी एक बड़ी चिंता का विषय बना रहता है। इसलिए विकास के इस आंकड़े को बनाए रखने के लिए जोखिम प्रबंधन पर विशेष जोर देना होगा। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि 6.4 प्रतिशत से 7 प्रतिशत तक का यह सफर केवल एक मामूली सा गणितीय बदलाव नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र की मजबूत बुनियाद का परिचायक है। सरकार की नीतियां, उद्यमियों का साहस और आम नागरिक की मेहनत मिलकर इस आर्थिक महाकाव्य को लिख रहे हैं। यदि आर्थिक सुधारों की यह प्रक्रिया इसी तरह बिन रुके चलती रही और सामने आने वाली चुनौतियों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया गया, तो भारत को एक विकसित और समृद्ध अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने बढ़ाई भारत की विकास दर

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा वित्तीय वर्ष 2026–27 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर के अनुमान को 6.4 प्रतिशत से बढ़ाकर 7 प्रतिशत करना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक अत्यंत उत्साहवर्धक और सकारात्मक संकेत है। वैश्विक पटल पर जब कई बड़ी और विकसित अर्थव्यवस्थाएं मंदी, महंगाई और अस्थिरता के दौर से गुजर रही हैं, तब भारत की विकास दर में इस तरह का सकारात्मक संशोधन देश की आर्थिक नीतियों और मजबूत आधारभूत संरचना की सफलता को प्रमाणित करता है। यह केवल एक संख्यात्मक वृद्धि नहीं है, बल्कि यह विश्व समुदाय के उस अटूट भरोसे का प्रतीक है जो उसने भारत की आर्थिक संभावनाओं पर जताया है। सात प्रतिशत की यह जादुई विकास दर भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की सूची में सबसे ऊपर रखती है और यह स्पष्ट करती है कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद देश का आर्थिक पहिया तेज गति से घूम रहा है। इस शानदार आर्थिक वृद्धि के पीछे सबसे बड़ा कारण देश की अपनी मजबूत घरेलू मांग है। पश्चिमी देशों की तरह भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह से केवल निर्यात पर निर्भर नहीं है, बल्कि यहां का विशाल मध्यवर्ग और उसकी

उपभोग क्षमता अर्थव्यवस्था को एक मजबूत ढाल प्रदान करती है। जब वैश्विक बाजारों में मांग कम होती है, तब देश के भीतर की खपत उत्पादन को गिरने नहीं देती। पिछले कुछ वर्षों में लोगों की क्रय शक्ति में जो सुधार आया है, उसने बाजार में उत्पादों और सेवाओं की मांग को निरंतर बनाए रखा है। यह घरेलू मांग ही है जिसके कारण छोटे से लेकर बड़े उद्योगों तक का चक्र सुचारु रूप से चल रहा है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में खपत बढ़ने से विनिर्माण और खुदरा व्यापार को भारी लाभ मिल रहा है, जो अंततः सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों में परिलक्षित हो रहा है। घरेलू मांग के साथ ही सेवा क्षेत्र इस विकास यात्रा का एक बहुत महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है। भारत का सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं, स्वास्थ्य और शिक्षा, न केवल देश के भीतर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी धाक जमा रहा है। तकनीक के निरंतर विस्तार और नवाचार ने भारतीय उद्यमों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने योग्य बनाया है। वित्तीय सेवाओं के आधुनिकीकरण और लेनदेन की नई तकनीकी प्रणालियों ने भी व्यापार को आसान और पारदर्शी बनाया है। सेवा क्षेत्र का लगातार विस्तार न केवल विदेशी मुद्रा भंडार

को बढ़ा रहा है, बल्कि यह लाखों युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर रहा है। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती पैठ उसे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर रही है। सरकार द्वारा बुनियादी ढांचे के विकास पर किया जा रहा भारी पूंजीगत व्यय भी इस सात प्रतिशत की वृद्धि का एक प्रमुख वाहक है। नई सड़कों, राजमार्गों, रेलवे मार्गों, हवाई अड्डों और बंदरगाहों के निर्माण से न केवल देश के विभिन्न हिस्से आपस में बेहतर तरीके से जुड़ रहे हैं, बल्कि इससे माल ढुलाई और व्यापार की लागत में भी भारी कमी आ रही है। बुनियादी ढांचे पर खर्च किया गया धन अर्थव्यवस्था में कई गुना अधिक प्रभाव डालता है। इससे निर्माण सामग्री उद्योगों को सीधा लाभ मिलता है और दिखाड़ी मजदूरों से लेकर तकनीकी विशेषज्ञों तक हर स्तर पर रोजगार का सृजन होता है। सरकार की यह दूरदर्शी सोच अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक मजबूती प्रदान कर रही है, जिससे भविष्य में विकास की रफ्तार को और भी तेज किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त विनिर्माण क्षेत्र में जान फूंकने के लिए लागू की गई उत्पादन आधारित प्रोत्साहन जैसी योजनाओं का भी सकारात्मक असर दिखने लगा है। देश को वैश्विक विनिर्माण का केंद्र बनाने की दिशा में

यह एक बड़ा कदम है। अब संचार उपकरणों से लेकर रक्षा सामग्री और बिजली से चलने वाले उपकरणों तक का निर्माण बड़े पैमाने पर देश के भीतर ही हो रहा है। इससे आयात पर निर्भरता कम हो रही है और व्यापार घाटा भी सुधर रहा है। जब देश में नई औद्योगिक इकाइयां लगती हैं, तो वे अपने साथ कुशल और अकुशल दोनों तरह के कामगारों के लिए आजीविका लेकर आती हैं। युवाओं को रोजगार मिलने से उनकी आमदनी बढ़ती है, जिससे वे बाजार में अधिक पैसा खर्च करते हैं, और यह चक्र पूरी अर्थव्यवस्था को लगातार गति प्रदान करता है। भारत जैसे विशाल देश में असली आर्थिक विकास तब तक संभव नहीं है जब तक कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यधारा के साथ पूरी तरह से कदम मिलाकर न चले। कृषि और उससे जुड़े उद्योगों का देश के सकल घरेलू उत्पाद में बहुत बड़ा योगदान है। अच्छी उपज और बेहतर समर्थन मूल्य के कारण ग्रामीण आय में जो वृद्धि दर्ज की गई है, उसने कृषि उपकरणों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मांग को तेज किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ता उपभोग इस बात का संकेत है कि विकास का लाभ केवल शहरों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के निचले पायदान तक भी पहुंच रहा है। आर्थिक समावेशन की

यह प्रक्रिया विकास को अधिक टिकाऊ और संतुलित बनाती है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के इस नए अनुमान का सीधा असर विदेशी निवेशकों की मानसिकता पर भी पड़ेगा। दुनिया भर के निवेशक हमेशा ऐसे बाजारों की तलाश में रहते हैं जहां उन्हें स्थिरता, सुरक्षा और उच्च लाभ की गारंटी मिल सके। जब एक शीर्ष वैश्विक संस्था भारत की विकास दर को बढ़ाती है, तो यह निवेशकों के लिए एक स्पष्ट संकेत होता है कि भारत निवेश के लिए सबसे सुरक्षित और लाभदायक स्थान है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के बढ़ने से देश में नई तकनीक आती है, उत्पादन क्षमता का विस्तार होता है और वैश्विक बाजारों तक हमारी पहुंच आसान हो जाती है। इसके साथ ही, देश के प्रतिभूति बाजारों में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जिससे आम निवेशकों की संपत्ति में भी इजाफा होता है। हालांकि, इस उच्च विकास दर के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं, जिन पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। मुद्रास्फीति यानी महंगाई दर को नियंत्रित रखना सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक है। यदि वस्तुओं और सेवाओं के दाम तेजी से बढ़ते हैं, तो वह आम आदमी की क्रय शक्ति को कम कर देता है, जिससे अंततः घरेलू मांग प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा, वैश्विक

भू-राजनीतिक तनाव, जैसे युद्ध और आपूर्ति श्रृंखला में आने वाली बाधाएं, कच्चे तेल और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को अस्थिर कर सकते हैं। कृषि क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन और अनियमित मौसम का प्रभाव भी एक बड़ी चिंता का विषय बना रहता है। इसलिए विकास के इस आंकड़े को बनाए रखने के लिए जोखिम प्रबंधन पर विशेष जोर देना होगा। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि 6.4 प्रतिशत से 7 प्रतिशत तक का यह सफर केवल एक मामूली सा गणितीय बदलाव नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र की मजबूत बुनियाद का परिचायक है। सरकार की नीतियां, उद्यमियों का साहस और आम नागरिक की मेहनत मिलकर इस आर्थिक महाकाव्य को लिख रहे हैं। यदि आर्थिक सुधारों की यह प्रक्रिया इसी तरह बिन रुके चलती रही और सामने आने वाली चुनौतियों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया गया, तो भारत को एक विकसित और समृद्ध अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का यह अनुमान इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि भारत सही दिशा में आगे बढ़ रहा है और आने वाले दशक पूरी तरह से भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वर्णिम काल होने वाले हैं।



बॉलीवुड अपडेट

अमेरिकी डोनेर्स पर मैरी मिलबेन का आरोप



अमेरिकी गायिका और अभिनेत्री मैरी मिलबेन ने आरोप लगाया है कि अमेरिका में मौजूद कुछ दानदाता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरोध के कारण भारत में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) को आर्थिक मदद दे रहे हैं। उन्होंने भारतीय युवाओं से इस संगठन की कथित विघटनकारी गतिविधियों के खिलाफ आगे आने और शांतिपूर्ण तरीके से विरोध दर्ज कराने की अपील की है। हालांकि, उनके आरोपों के समर्थन में सार्वजनिक रूप से सत्यापित वित्तीय साक्ष्य सामने आने की पुष्टि नहीं हुई है।

मैरी मिलबेन ने 14 अक्टूबर को सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट के जरिए यह दावा किया। उनका बयान ऐसे समय आया, जब दिल्ली में विपक्षी दलों और सीजेपी से जुड़े प्रदर्शनकारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में कथित अनियमितताओं को लेकर मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग कर रहे थे। इस मुद्दे पर राजनीतिक टकराव के बीच मिलबेन के बयान ने बहस को और तेज कर दिया है।

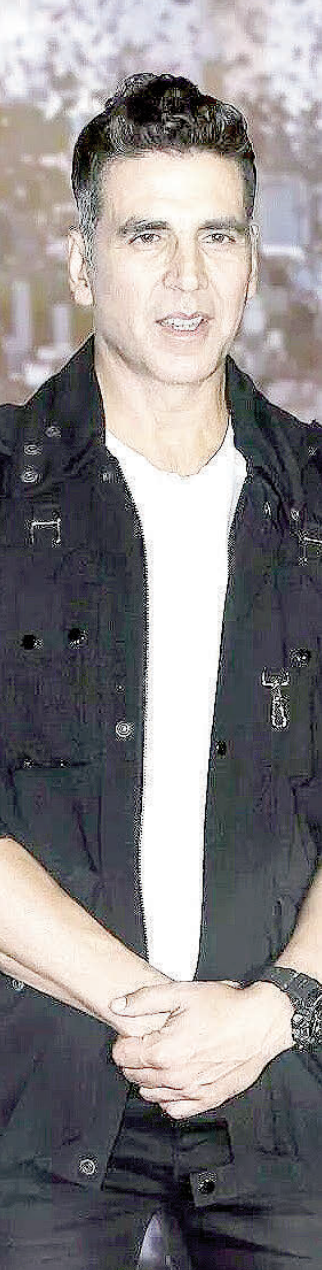


श्रिया सरन ने ऑडिशन के लिए शादी छोड़ी

माता-पिता चाहते थे कि श्रिया सरन पढ़ाई पूरी करने के बाद एक्टिंग में आएँ, लेकिन एक म्यूजिक वीडियो ने उनकी जिंदगी की दिशा बदल दी। तेलुगु फिल्म 'इष्टम' से करियर शुरू करने वाली श्रिया ने साउथ की फिल्मों में पहचान बनाई, लेकिन बॉलीवुड में संघर्ष करना पड़ा। 'तुझे मेरी कसम', 'शुक्रिया' और 'मिशन इस्तांबुल' से उन्हें अपेक्षित सफलता नहीं मिली। उन्होंने करियर में गलत फैसले लेने की बात भी स्वीकार की। इसके बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। रजनीकांत की 'शिवाजी', अजय देवगन की 'दृश्यम' फ्रेंचाइजी और एसएस राजामौली की 'आरआरआर' ने उन्हें नई पहचान दी। डांस टीचर की सलाह ने बदली जिंदगी, बिना प्लानिंग के फिल्मों में आई श्रिया सरन का फिल्मी सफर पारंपरिक तरीके से शुरू नहीं हुआ। उनके परिवार का फिल्मों से कोई संबंध नहीं था और न ही उन्होंने बचपन से अभिनेत्री बनने का सपना देखा था। उनका जन्म 11 सितंबर 1982 को हुआ। हरिद्वार में शुरूआती जीवन बिताने के बाद वह दिल्ली आई। वहां उन्होंने लेडी श्रीराम कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य की पढ़ाई के साथ कथक की ट्रेनिंग भी ली। कॉलेज के दिनों में म्यूजिक वीडियो में काम करने का मौका मिलने से श्रिया की जिंदगी बदल गई। उनकी डांस टीचर ने प्रोडक्शन कंपनी को उनका नाम सुझाया था। श्रिया ने इसे करियर बनाने की योजना के बजाय नया अनुभव माना और ऑडिशन देने पहुंच गईं। इसके बाद वह 'थिरकती क्यों हवा' म्यूजिक वीडियो में नजर आईं, जिसने फिल्मों के दरवाजे खोले। उन्हें तेलुगु

फिल्म 'इष्टम' का ऑफर मिला और 17 साल की उम्र में वह अभिनय की दुनिया में आ गईं। **माता-पिता की शर्त थी, पहले पूरी करो पढ़ाई** श्रिया के माता-पिता उनके एक्टिंग के फैसले से बहुत उत्साहित नहीं थे। उनके पिता इंजीनियर थे और मां स्कूल में केमिस्ट्री की टीचर थीं। परिवार चाहता था कि बेटी पहले पढ़ाई पूरी करे, फिर करियर का फैसला ले। श्रिया के सामने शर्त थी कि वह फिल्मों में काम करें, लेकिन पढ़ाई बीच में न छोड़ें। उन्हें दोनों जिम्मेदारियों साथ निभानी थीं। तेलुगु फिल्म 'इष्टम' की शूटिंग के लिए उन्हें हैदराबाद जाना पड़ा। सेट पर काम सीखने के साथ कॉलेज की पढ़ाई भी जारी रखनी थी। भाषा की चुनौती भी थी, क्योंकि उन्हें तेलुगु नहीं आती थी। फिल्मफेयर को दिए इंटरव्यू में श्रिया ने शूटिंग के शुरूआती दिनों का किस्सा सुनाया था। एक बार तेलुगु डायलॉग बोलते हुए वह अटक गईं। निर्देशक ने कहा कि डायलॉग नहीं बोल पाईं तो उन्हें दिल्ली लौटना पड़ेगा। श्रिया ने तुरंत डायलॉग बोल दिया, क्योंकि वह कॉलेज लौटने के बजाय फिल्म की शूटिंग जारी रखना चाहती थीं। 'इष्टम' के बाद श्रिया को तेलुगु फिल्मों में काम मिलने लगा। 2002 में आई 'संतोषम' उनके करियर की शुरूआती सफल फिल्मों में शामिल रही। इसके बाद उन्होंने तमिल-तेलुगु सिनेमा में लगातार काम किया। हिंदी फिल्मों में उनका सफर आसान नहीं रहा। उन्होंने 'तुझे मेरी कसम', 'शुक्रिया: टिल डेथ इ अस अपार्ट' और 'मिशन इस्तांबुल' में काम किया, लेकिन उन्हें मनचाही पहचान नहीं मिली।

मसूरी में बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार की तबीयत बिगड़ी



मसूरी में बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार की तबीयत बिगड़ गई थी। उनकी पीठ में खिंचाव आने और ठंड के कारण दर्द होने की बात सामने आई थी। इसके बाद उन्हें देहरादून के राजपुर स्थित एक गेस्ट हाउस में ठहराया गया, जहां डॉक्टरों ने उनका इलाज किया। फिलहाल अक्षय कुमार मसूरी के होटल सर्वाय में ठहरे हुए हैं। अक्षय कुमार की टीम के अनुसार, मसूरी के लाइब्रेरी चौक पर शूटिंग के दौरान अचानक उनकी पीठ में दर्द उठा, जिसके बाद शूटिंग रोकनी पड़ी। वह मंगलवार को दिल्ली से सड़क मार्ग के जरिए कार से उत्तराखंड पहुंचे थे। उन्हें यहां दो दिन तक शूटिंग करनी थी। बुधवार सुबह तबीयत बिगड़ने के कारण वह शूटिंग के लिए मसूरी नहीं पहुंच पाए। अब दर्द में कुछ राहत मिलने के बाद अक्षय कुमार दोबारा मसूरी पहुंच गए हैं। वह फिल्म की शूटिंग कर रहे हैं। हालांकि, अगर दर्द ज्यादा बढ़ता है तो वह दिल्ली लौट सकते हैं।

शूटिंग के दौरान पीठ में खिंचाव, सीक्रेट गेस्ट हाउस में चला इलाज अक्षय कुमार इन दिनों साईंस-फिक्शन सर्वाइवल थ्रिलर फिल्म 'समुक' की शूटिंग कर रहे हैं। फिल्म के निर्माता विपुल अमृतलाल शाह हैं, जबकि निर्देशन कनिष्क वर्मा कर रहे हैं। फिल्म का ब्रिटेन शेड्यूल हाल ही में पूरा हुआ है। इसे 2027 में रिलीज करने की योजना है। इससे पहले ही अक्षय कुमार मसूरी में शूटिंग कर चुके हैं। अक्षय कुमार मई 2023 में उत्तराखंड आए थे। उस दौरान उन्होंने फिल्म 'शंकरा' की शूटिंग के लिए रुड़की और आसपास के इलाकों का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के दर्शन कर पूजा-अर्चना की थी। उन्होंने देहरादून में सीएम पुष्कर सिंह धामी से उनके सरकारी आवास पर मुलाकात भी की थी। इससे पहले 18 फरवरी 2022 में वह फिल्म 'कठपुतली' की शूटिंग के लिए मसूरी और देहरादून आए थे।

सुनीता बेबी के देसी डांस पर झूम उठे बुजुर्ग

हरियाणवी लोकगीतों और मंचीय नृत्य का आकर्षण लोगों के बीच लगातार बना हुआ है। हरियाणवी डांसर सुनीता बेबी के डांस वीडियो भी सोशल मीडिया पर दर्शकों का ध्यान खींचते रहते हैं। उनके पुराने मंचीय कार्यक्रमों के वीडियो भी समय-समय पर इंटरनेट पर साझा किए जाते हैं और दर्शक उन्हें खूब देखते हैं। सुनीता बेबी अपने चटपटे अंदाज, फुर्तीले डांस स्टेप और हरियाणवी गीतों पर प्रस्तुति के लिए जानी जाती हैं। उनके कार्यक्रमों में दर्शकों की भागीदारी भी देखने को मिलती है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले मंचीय कार्यक्रमों में हरियाणवी गीत-संगीत का अलग ही उत्साह रहता है।



कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों के जरिए दर्शकों के बीच पहचान बनाई है। हरियाणवी गीत अब केवल स्थानीय आयोजनों तक सीमित नहीं हैं। यूट्यूब और अन्य सामाजिक माध्यमों के कारण इनकी पहुंच देश के अलग-अलग हिस्सों तक हो गई है। पुराने गीतों और मंचीय प्रस्तुतियों को भी नए दर्शक मिल रहे हैं।

18 साल की उम्र में हेडन पैनेटीयर के साथ हुई थी दुर्व्यवहार की कोशिश

हॉलीवुड अभिनेत्री और गायिका हेडन पैनेटीयर ने अपने जीवन के एक भयावह अनुभव का खुलासा किया है। अभिनेत्री के मुताबिक, जब वह महज 18 साल की थीं, तब उनकी एक भरोसेमंद सहेली उन्हें दक्षिण फ्रांस में एक आलीशान नौका पर बने छोटे से कमरे में ले गई। वहां एक बेहद मशहूर व्यक्ति बिस्तर पर बिना कपड़ों के लेटा हुआ था। अभिनेत्री का आरोप है कि उनकी सहेली ने उन्हें उस व्यक्ति के साथ बिस्तर पर लेटने और यौन गतिविधियों में शामिल होने के लिए कहा। इस घटना ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया था। 36 वर्षीय हेडन ने यह आपबीती अभिनेता और प्रस्तोता जे शेटी के पांडकास्ट 'ऑन पर्स' में साझा की। उन्होंने बताया कि उस समय वह मनोरंजन जगत में अपना करियर बना रही थीं और अपनी सहेली पर पूरा भरोसा करती थीं। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि जिस व्यक्ति को वह अपना शुभचिंतक और रक्षक समझती थीं, वही उन्हें ऐसी असहज परिस्थिति में पहुंचा देगा। **सहेली ने कमरे में पहुंचाकर छोड़ा:** अभिनेत्री के अनुसार, वह दक्षिण फ्रांस में कई मशहूर हस्तियों की मौजूदगी वाली एक आलीशान नौका पर थीं। यात्रा के दौरान उनकी करीबी सहेली उन्हें नौका के नीचे बने एक छोटे से निजी कमरे में ले गईं। वहां एक मशहूर व्यक्ति बिस्तर पर लेटा हुआ था। हेडन के मुताबिक, उनकी सहेली ने उन्हें उसके साथ बिस्तर पर जाने के लिए कहा और फिर वहां से चली गईं। हेडन ने बताया कि उस समय उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आखिर उनके साथ यह सब क्यों हो रहा है। उन्हें स्थिति की गंभीरता का एहसास होने पर लगा कि वह खतरे में है। उन्होंने

दक्षिण फ्रांस की नौका पर घटना: मशहूर व्यक्ति के साथ बिस्तर पर जाने के लिए कहे जाने का दावा



एक नज़र

सूर्यकुमार यादव को जो जख्म 52 मैचों में मिला, वो कप्तान श्रेयस अय्यर ने 20 मैचों में झेला

नई दिल्ली। श्रेयस अय्यर की अगुवाई वाली भारतीय टीम को वेस्टइंडीज के हाथों चौथे टी20 में 24 रनों से हार मिली। वेस्टइंडीज ने बुधवार को हैदराबाद के मैदान पर 247/3 का विशाल स्कोर बनाया। जवाब भारतीय टीम 19.3 ओवर में 223 रन ही जुटा की। संजु सैमसन (23 गेंदों में 52), तिलक वर्मा (25 गेंदों में 43) और नीतीश कुमार रेड्डी (20 गेंदों में 41) ने तूफानी बैटिंग की लेकिन जीत की दहलीज पार नहीं हुई। श्रेयस के बल्ले से 11 गेंदों में 16 रन निकले, जिसमें दो चौके शामिल हैं। वेस्टइंडीज की ओर से कीमो पॉल ने पंजा खोला। उन्होंने 42 रन देकर 5 विकेट चटकाए। वेस्टइंडीज ने पांच मैचों की टी20 सीरीज में 2-2 की बराबरी हासिल कर ली है। श्रेयस को जून 2026 में सूर्यकुमार यादव की जगह भारतीय टी20 टीम का कप्तान नियुक्त किया गया था। सूर्या ने अपनी कप्तानी में जो जख्म 52 मैचों में मिला, वो श्रेयस को 20 मैचों में झेलना पड़ गया है। दरअसल, श्रेयस टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा मैच हारने वाले भारतीय कप्तानों की लिस्ट में संयुक्त रूप से चौथे पायदान पर पहुंच गए हैं। उन्होंने सूर्यकुमार की बराबरी की। श्रेयस अब तक 20 मुकाबलों में कप्तानी करने के बाद 8 विकेट गंवाए हैं और 11 में जीत दर्ज की। एक मैच बेनतीया रहा। वहीं, सूर्या ने 52 मैचों में भारतीय टीम की कप्तान संभालने के बाद 8 में हार का सामना किया और 42 में जीत नसीब हुई। दो मैच का रिजल्ट नहीं निकला। टी20 में बतौर भारतीय कप्तान सबसे ज्यादा मैच एमएस धोनी ने गंवाए हैं। उन्होंने 72 मैचों में बागडोर संभाली और 28 में हार का मुंह देखा। उनकी कप्तानी में भी भारत ने 42 मैच जीते और दो बेनतीया रहे। टी20 में सबसे ज्यादा मैच हारने वाले भारतीय कप्तान (कुल मैचों की संख्या) 28 – एमएस धोनी (72) 16 – विराट कोहली (50) 12 – रोहित शर्मा (62) 8 – श्रेयस अय्यर (20) 8 – सूर्यकुमार यादव (52) 5 – हार्दिक पांड्या (16) हैदराबाद टी20 गंवाने के बाद कप्तान श्रेयस अय्यर ने कहा कि वे योजनाओं पर अमल नहीं कर सके। उन्होंने कहा, हम गेंदबाजी में योजनाओं को अमल में नहीं ला सके। 250 रन के लक्ष्य को हासिल करना कभी भी आसान नहीं रहता। हम 12 रन प्रति ओवर के अधिक की रेट से रन बना रहे थे और वेस्टइंडीज ने बढिया गेंदबाजी की और इसका श्रेय उन्हें जाता है। अय्यर ने कहा, गेंद का बाउंस भी अधिक हो गया था लेकिन उनके गेंदबाजों ने बदली हुई परिस्थितियों को भांपा। अगला मुकाबला काफी दिलचस्प होगा। टी20 सीरीज का पांचवां और निर्णायक मुकाबला शनिवार को बेंगलुरु में आयोजित होगा।

श्रेयस अय्यर ने विराट-रोहित के स्पेशल क्लब में एंट्री मारी, टी20 में भारतीय सरजमीं पर बने एक हजारी

नई दिल्ली। श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली टीम इंडिया को वेस्टइंडीज के खिलाफ चौथे टी20 में 24 रनों से हार का मुंह देखना पड़ा। वेस्टइंडीज ने हैदराबाद के मैदान पर 247/3 का स्कोर खड़ा किया और जवाब में भारत ने 223 रन जुटाए। बुधवार को संजू सैमसन (56) ने अर्धशतक जमाया जबकि उप्तमान तिलक वर्मा ने 43 और नीतीश कुमार रेड्डी ने 41 रनों का योगदान दिया। अय्यर ने 11 गेंदों का सामना करने के बाद 16 रन जुटाए, जिसमें दो चौके हैं। 31 वर्षीय अय्यर भले ही बड़ पारी नहीं खेल पाए लेकिन एक स्पेशल क्लब में एंट्री करने में सफल रहे, जिसमें विराट कोहली और रोहित शर्मा भी हैं। अय्यर भारत में टी20 इंटरनेशनल में एक हजार या उससे अधिक रन बनाने वाले आठवें खिलाड़ी बन गए हैं। वह भारतीय संस्रजमीं पर 40 टी20 पारियों खेलने के बाद एक हजारी बने। वैसे, अय्यर ने भारत के लिए सबसे छोटें फॉर्मेट में 71 मैचों में 1672 रन जुटाए हैं। भारत में सबसे ज्यादा टी20 रन बनाने का रिकॉर्ड सुपरस्टार विराट के नाम दर्ज है। उन्होंने 45 पारियों में 1577 रन जोड़े। कोहली ने कुल 125 टी20 खेले और 4188 रन बनाए। हिटमैन के नाम से मशहूर रोहित ने भारत में 57 टी20 पारियों में 1532 रन बटोरे। उन्होंने कुल 159 मैचों में 4231 रन जोड़े। रोहित और विराट टेस्ट और टी20 इंटरनेशनल से संन्यास ले चुके हैं और भारत के लिए सिर्फ वनडे में एक्टिव हैं। भारत में सबसे ज्यादा टी20 रन बनाने वाले खिलाड़ी 1577 – विराट कोहली (45 पारियां) 1532 – रोहित शर्मा (57 पारियां) 1530 – सूर्यकुमार यादव (50 पारियां) 1313 – ईशान किशन (41 पारियां) 1212 – हार्दिक पांड्या (53 पारियां) 1102 – अभिषेक शर्मा (31 पारियां) 1018 – केपल खलुल (30 पारियां) 1007 – श्रेयस अय्यर (40 पारियां) हैदराबाद टी20 की बात करें तो भारत को गेंदबाजी की कमजोरियों के उजागर होने के बाद बल्लेबाजों से भी निराशा मिली जिससे वेस्टइंडीज ने चौथे मुकाबले में जीत दर्ज करके पांच मैच की टी20 सीरीज में 2-2 से बराबर कर ली।

रिटायरमेंट का फैसला नहीं बदलेंगे सिकंदर रजा, वर्ल्ड कप 2027 होगा आखिरी टूर्नामेंट

नई दिल्ली। जिम्बाब्वे के टीम के दिग्गज क्रिकेटर सिकंदर रजा ने कुछ समय पहले ही रिटायरमेंट का ऐलान किया था। उन्होंने तत्काल प्रभाव से तो नहीं, लेकिन ये जानकारी दे दी थी कि वह कब तक जिम्बाब्वे के लिए खेलने वाले हैं। यहां तक कि 2027 के बाद जिम्बाब्वे को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के नए चक्र में शामिल भी किया जा सकता है, लेकिन इससे सिकंदर रजा का फैसला बदलने वाला नहीं है। जिम्बाब्वे की वनडे और टी20 टीम के कप्तान सिकंदर रजा ने कहा कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2027-29 चक्र में उनकी टीम के आने की संभावना के बावजूद अगले साल अफ्रीका में होने वाले 50

ओवरों के विश्व कप के बाद संन्यास का उनका फैसला नहीं बदलेगा। जिम्बाब्वे वनडे विश्व कप 2027 में दक्षिण अफ्रीका और नाम्बीबिया के साथ सह मेजबान है। मेजबान के तौर पर टीम ने टूर्नामेंट के लिए कालीफार्नी भी कर लिया है। उन्हें कम से कम आधा दर्जन मैच खेलने को मिल सकते हैं। पीटीआई के मुताबिक, रजा ने कहा, मेरे करियर का यह आखिरी दौर है और अपने देश में विश्व कप खेलना मेरे लिये वरदान से कम नहीं है। हर क्रिकेटर का सपना विश्व कप खेलकर संन्यास लेने का होता है । यह पूछने पर कि अगर जिम्बाब्वे 2027-30 चक्र में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप में जगह बनाता है तो क्या

उनका फैसला बदलेगा, उन्होंने कहा, नहीं। ऐसा कुछ नहीं होगा। मैंने फैसला कर लिया है और वह नहीं बदलने वाला। हालांकि, उन्होंने माना है कि डब्ल्यूटीसी में प्रवेश से जिम्बाब्वे क्रिकेट का विकास होगा। उन्होंने कहा, अगर ऐसा हुआ तो मैं उसके समर्थन में सबसे आगे रहूंगा। जिम्बाब्वे अगर डब्ल्यूटीसी का हिस्सा बनता है तो भले ही हमारा प्रदर्शन शुरुआत में अच्छा नहीं रहे, लेकिन इससे देश में क्रिकेट का काफी तेजी से विकास होगा। हमारा प्रदर्शन बेहतर होगा। सिकंदर रजा की बात करें तो वे जिम्बाब्वे की टीम के लिए काफी प्रतिबद्धता दिखाते नजर आते हैं। टी20 लीग बीच में छोड़कर भी वे अपने देश

को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने कहा, महिला हॉकी टीम ने स्वर्ण लाकर 44 साल के लंबे इंतजार को खत्म किया है। आज भारत ऐसे खेलों में भी पदक जीत रहा है जिनमें एशियाई खेलों में हमें पहले कभी पदक नहीं मिला था। उन्होंने खिलाड़ियों से युवाओं को प्रेरित करने का आह्वान करते हुए कहा जिन मैदानों पर आपने खेलना शुरू किया था, वहां जरूर जाइए। देश के युवाओं को आपसे केवल खेल की प्रेरणा नहीं मिलती बल्कि खेल हमें गिरकर फिर से खड़े होने, हारकर जीतने की सीख देते हैं। खिलाड़ियों और खेलों के इकोसिस्टम पर काम किया है। देश में यह बदलाव उसी भावना से आया है जिसकी बदौलत खिलाड़ियों ने सफलता हासिल की है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज हर खिलाड़ी को यह भरोसा रहता है कि उसके पूरे सफर में देश उसके साथ है और यह उसकी सफलता में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने एशियाई खेलों में युवाओं और महिला खिलाड़ियों खासकर स्वर्ण पदक विजेता महिला हॉकी टीम की खास तौर पर तारीफ की। उन्होंने कहा, एशियाई खेलों में 15 और 17 साल के खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने रिर्कोर्ड। उन्होंने महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद का जिक्र करते हुए कहा कि हॉकी के प्रति उनका समर्पण और परिश्रम याद दिलाता है कि संकल्प और सपने एक दिन में पूरे नहीं होते। उन्होंने कहा, इसके लिए वर्षों का धैर्य और लगातार परिश्रम अनिवार्य

जुनून जब जीत में बदलता है तो, प्रधानमंत्री मोदी ने एशियन गेम्स के पदक विजेताओं को दिलाया ये संकल्प

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आइची-नागोया एशियन गेम्स 2026 में पदक जीतने वाले भारतीय खिलाड़ियों से मुलाकात के दौरान ओलंपिक 2036 की मेजबानी के संकल्प को दोहराते हुए कहा कि भारत के सपने बड़े हैं और उन्हें पूरा करने का आत्मविश्वास भी हर भारतीय के पास है। जापान में एशियाई खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को नई दिल्ली में मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम पर संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, हमारे सपने बड़े हैं, हमारे संकल्प भी बड़े हैं लेकिन इन्हें पूरा करने का आत्मविश्वास भी आज हर हिंदुस्तानी के पास है। इसलिए मैं पूरे विश्वास से कहता हूं कि भारत 2036 में ओलंपिक की मेजबानी करेगा। उन्होंने कहा, आपका उत्साह, आत्मविश्वास ही नये भारत की सबसे बड़ी ताकत है। इसी के साथ हमें भारत को नई बुलदियों तक पहुंचाना है। 2047 में विकसित भारत, ओलंपिक का आयोजन, नए खेलों में पदक, हम यह सारे लक्ष्य हासिल करेंगे। प्रधानमंत्री ने एशियाई खेलों में मिले पदकों को करोड़ों भारतीयों की सफलता बताते हुए कहा, आप सभी युवा एथलीट इस बात के उदाहरण हैं कि जुनून जब जीत में बदलता है तो कैसे पदक के साथ चेहरे की चमक भी लेकर आता है। आपकी सफलता केवल आपकी नहीं बल्कि देश के करोड़ों नागरिकों की सफलता है। इस मौके पर एशियाई खेलों में पहली बार एकसाथ स्वर्ण पदक जीतने वाली



भारतीय पुरुष और महिला हॉकी टीमों ने खिलाड़ियों के हस्ताक्षर वाली स्टिक और जर्सी प्रधानमंत्री को भेंट की। लगातार दूसरी बार स्वर्ण जीतने वाली दोनों क्रिकेट टीमों (पुरुष और महिला) ने भी जर्सी , तीरंदाजी में दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीतने वाली कुमकुम मोहोद ने तीर और धनुष, स्वर्ण पदक विजेता गोल्फर प्रणवी उर्स ने गोल्फ बॉल और दस्ताने दिए। प्रधानमंत्री ने कहा, हमें खेलों में और भी बड़ी ऊंचाइयों तक जाना है। मैं आपको संकल्प कराना चाहता हूं कि हर मैदान पर तिरंगे की शान, खेलों में भारत की नई पहचान, हर खेल में नए चैम्पियंस , हमारे नाम कई और नए रिकॉर्ड। उन्होंने महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद का जिक्र करते हुए कहा कि हॉकी के प्रति उनका समर्पण और परिश्रम याद दिलाता है कि संकल्प और सपने एक दिन में पूरे नहीं होते। उन्होंने कहा, इसके लिए वर्षों का धैर्य और लगातार परिश्रम अनिवार्य

होता है। भारत ने भी बीते बारह वर्षों में बहुत धैर्य और परिश्रम के साथ अपने खिलाड़ियों और खेलों के इकोसिस्टम पर काम किया है। देश में यह बदलाव उसी भावना से आया है जिसकी बदौलत खिलाड़ियों ने सफलता हासिल की है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज हर खिलाड़ी को यह भरोसा रहता है कि उसके पूरे सफर में देश उसके साथ है और यह उसकी सफलता में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने एशियाई खेलों में युवाओं और महिला खिलाड़ियों खासकर स्वर्ण पदक विजेता महिला हॉकी टीम की खास तौर पर तारीफ की। उन्होंने कहा, एशियाई खेलों में 15 और 17 साल के खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने रिर्कोर्ड। उन्होंने महारी बेटियों की खास तौर पर सराहना करना चाहता हूं। भारत ने जो 85 पदक जीते हैं, उनमें से 38 महिला खिलाड़ियों ने जीते हैं और इनमें 11 स्वर्ण शामिल हैं। ये पदक सिर्फ एक संख्या नहीं है बल्कि

ब्रॉड-बटलर ने चुने 21वीं सदी के टॉप 10 टेस्ट गेंदबाज, लिस्ट में एक भारतीय; मुस्लीधरन को लेकर चौंकाया

इंग्लैंड के पूर्व पेसर स्टुअर्ट ब्रॉड और विकेटकीपर-बल्लेबाज जोस बटलर ने अपने पसंदीदा 21वीं सदी के टॉप 10 टेस्ट गेंदबाज चुने हैं। ब्रॉड और बटलर ने पहले अपनी-अपनी ड्राफ्ट लिस्ट बनाई और फिर चर्चा करके दस गेंदबाजों को रैंक किया। दोनों ने मिलकर जो कम्बाइंड लिस्ट तैयारी की, उसमें ऑस्ट्रेलिया के चार, साउथ अफ्रीका के तीन जबकि भारत, इंग्लैंड और श्रीलंका का एक-एक गेंदबाज है। ब्रॉड और बटलर ने न्यूजीलैंड के ट्रेंट बोल्ट, ऑस्ट्रेलिया के मिचेल जोन्सन, पाकिस्तान के शोएब अख्तर, भारत के अनिल कुंबले और आर अश्विन का जिक्र किया लेकिन लिस्ट में शामिल नहीं किया। बटलर और ब्रॉड ने 21वीं सदी के टॉप 10 टेस्ट गेंदबाजों की लिस्ट में शेन वॉर्न को नंबर-1 पर रैंक किया है। ऑस्ट्रेलिया के महान स्पिनर वॉर्न ने 145 टेस्ट खेले और 708 विकेट लिए। वह सबसे ज्यादा टेस्ट विकेट लेने वालों में

दूसरे पायदान पर हैं। कम्बाइंड लिस्ट में इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन दूसरे स्थान पर हैं। उन्होंने 188 टेस्ट में 704 शिकार किए। बटलर और ब्रॉड ने भारत के धाकड़ पेसर जसप्रीत बुमराह तीसरे नंबर पर रखा है। 32 वर्षीय बुमराह ने अब तक 52 टेस्ट में 234 विकेट हासिल किए हैं। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्रा को चौथे स्थान पर रैंक किया गया। उन्होंने 124 अपने करियर में 124 टेस्ट खेले और 563 विकेट झटके। मैकग्रा के बाद ऑस्ट्रेलिया के कप्तान और पेसर पैट कर्मिस हैं। कर्मिस ने 75 टेस्ट में 326 शिकार किए हैं। श्रीलंका के महान स्पिनर मुथैया मुरलीधरन के नाम टेस्ट इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड दर्ज है। उन्होंने 133 टेस्ट मैचों में 800 शिकार किए। हालांकि, बटलर और ब्रॉड ने सभी को चौंकाते हुए मुरलीधरन को लिस्ट में छठे नंबर पर रखा।

शे होप भारत में इतिहास रचने की दहलीज पर, टूट जाएगा एबी डी विलियर्स का 11 साल पुराना रिकॉर्ड

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के कप्तान शे होप भारत दौरे पर गजब की फॉर्म में चल रहे हैं। वनडे सीरीज में दो शतक जमाने के बाद वह टी20 सीरीज में भी 2 सेंचुरी जड़ चुके हैं। वेस्टइंडीज ने भारत दौरे पर वनडे और टी20 मिलाकर अभी तक 3 मैच जीते हैं और इन तीनों ही मुकाबलों में शे होप प्लेयर ऑफ द मैच रहे हैं। भारत और वेस्टइंडीज के बीच 17 अक्टूबर को टी20 सीरीज का डिसाइडर यानी पांचवां और आखिरी टी20 मैच खेला जाना है। वेस्टइंडीज की टीम को होप से काफी उम्मीदें रहेंगी, मेहमान टीम तब चाहेगी कि वह उनके कप्तान इस मैच में भी शतक जड़े और टीम को मैच के साथ सीरीज जिताए। अगर शे होप ऐसा करने में कामयाब रहते हैं तो वह भारत में इतिहास रच सकेंगे हैं। ऐसा करने पर वह एबी डी विलियर्स का 11 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ देंगे। टेस्ट, वनडे



और टी20 मिलाकर भारत में सबसे ज्यादा शतक जड़ने का रिकॉर्ड साउथ अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज एबी डी विलियर्स के नाम है। उन्होंने 2015 में भारत में आखिरी वनडे शतक जड़ यह रिकॉर्ड बनाया था। उनके हमवतन क्रिंटन डी कॉक ने इसी साल डी विलियर्स के रिकॉर्ड की बराबरी की। अब शे होप ने भी भारत दौरे पर 4 शतक जड़ साउथ अफ्रीका के इस लीजेंड की बराबरी कर ली है। एबी डी

विलियर्स, क्रिंटन डी कॉक और शे होप-तीनों बल्लेबाजों के नाम संयुक्त रूप से भारत में बतौर विदेशी बल्लेबाज सबसे ज्यादा 8 शतक जड़ने का रिकॉर्ड है। होप के पास इस रिकॉर्ड को अपने नाम करने का आखिरी मौका है। अगर शे होप भारत के खिलाफ बेंगलुरु में होने वाले आखिरी टी20 में भी सेंचुरी लगाते हैं तो वह इतिहास रच देंगे। वह भारत में 9 सेंचुरी लगाने वाले पहले विदेशी खिलाड़ी बन जाएंगे। अभी तक लगाए 8 शतकों में होप ने 7 शतक भारत के खिलाफ ही लगाए हैं, जबकि 1 सेंचुरी उन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ 2019 में लगाई थी। भारत में सबसे ज्यादा सेंचुरी (विजिटिंग प्लेयर्स के हिसाब से) 8 – शे होप* 8 – एबी डी विलियर्स 8 – क्रिंटन डी कॉक 7 – क्रिस गेल 6 – रिचर्ड पॉटिंग केसा रहा भारत-वेस्टइंडीज चौथा टी20 भारत को गेंदबाजी की कमजोरियों के उजागर

होने के बाद बल्लेबाजों से भी निराशा मिली जिससे वेस्टइंडीज ने चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में मेजबान टीम को 24 रन से हराकर पांच मैच की सीरीज 2-2 से बराबर कर ली। कप्तान शे होप (नाबाद 102 रन) के शतक के बाद वेस्टइंडीज के लिए काफी पॉल ने 41 रन देकर पांच विकेट झटके जिससे 9 सेंचुरी करते हुए संजू सैमसन (23 गेंद) खिलाड़ी बन जाएंगे। अभी तक लगाए 8 शतकों में होप ने 7 शतक भारत के खिलाफ ही लगाए हैं, जबकि 1 सेंचुरी उन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ 2019 में लगाई थी। भारत में सबसे ज्यादा सेंचुरी (विजिटिंग प्लेयर्स के हिसाब से) 8 – शे होप* 8 – एबी डी विलियर्स 8 – क्रिंटन डी कॉक 7 – क्रिस गेल 6 – रिचर्ड पॉटिंग केसा रहा भारत-वेस्टइंडीज चौथा टी20 भारत को गेंदबाजी की कमजोरियों के उजागर

होने के बाद बल्लेबाजों से भी निराशा मिली जिससे वेस्टइंडीज ने चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में मेजबान टीम को 24 रन से हराकर पांच मैच की सीरीज 2-2 से बराबर कर ली। कप्तान शे होप (नाबाद 102 रन) के शतक के बाद वेस्टइंडीज के लिए काफी पॉल ने 41 रन देकर पांच विकेट झटके जिससे 9 सेंचुरी करते हुए संजू सैमसन (23 गेंद) खिलाड़ी बन जाएंगे। अभी तक लगाए 8 शतकों में होप ने 7 शतक भारत के खिलाफ ही लगाए हैं, जबकि 1 सेंचुरी उन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ 2019 में लगाई थी। भारत में सबसे ज्यादा सेंचुरी (विजिटिंग प्लेयर्स के हिसाब से) 8 – शे होप* 8 – एबी डी विलियर्स 8 – क्रिंटन डी कॉक 7 – क्रिस गेल 6 – रिचर्ड पॉटिंग केसा रहा भारत-वेस्टइंडीज चौथा टी20 भारत को गेंदबाजी की कमजोरियों के उजागर

वेस्टइंडीज के खिलाफ होगी भुवनेश्वर कुमार की पैराशूट लैंडिंग टीम इंडिया की बढ़ गई है टेंशन

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के खिलाफ 5 मैचों की टी20 सीरीज के आखिरी मैच के लिए भारतीय टीम में भुवनेश्वर कुमार की पैराशूट लैंडिंग हो सकती है। इस तरह के संकेत मिल रहे हैं, क्योंकि टीम इंडिया सीरीज डिसाइडर मैच से पहले बड़ी टेंशन में फंस चुकी है। भुवनेश्वर कुमार शनिवार 17 अक्टूबर को होने वाले मैच में खेलेंगे या नहीं? यह तो अभी पक्का नहीं है, लेकिन इस पर फैसला जल्द लिया जा सकता है। भुवी न्यूजीलैंड तो जा रहे हैं, लेकिन रविवार को बेंगलुरु में वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाले निर्णायक मैच में भी खेल सकते हैं। दरअसल, टीम इंडिया की टेंशन इसलिए बढ़ गई है, क्योंकि तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह, जो टीम इंडिया के इस समय मुख्य बॉलर टी20 क्रिकेट में हैं, वे चौथे टी20 मैच में बल्लेबाजी नहीं कर पाए थे। एक गेंद उनको कंधे पर लगी थी। इसके बाद उन्होंने आखिरी सामर्थ्य पर भी भुवनेश्वर कुमार पर फैसला ले सकता है। रिपोर्ट्स की मानें तो भुवनेश्वर कुमार बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में हैं। अगर अर्शदीप फिट नहीं होते हैं तो भुवी को भारत में ही खिलाया जा सकता है और इससे उन्हें अच्छी मैच प्रैक्टिस मिल जाएगी। भारतीय टीम को इससे फायदा यह होगा कि उन्हें एक अच्छा और अनुभवी गेंदबाज मिलेगा, साथ ही साथ बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम से वे परिचित हैं तो उसका फायदा भी भारत सीरीज डिसाइडर में उठा सकता है। अगर टीम मैनेजमेंट चाहेगा तो भुवनेश्वर कुमार को यहीं टीम में शामिल करने के लिए बॉर्ड को बोल सकता है और बोर्ड इस पर फैसला तुरंत ले सकता है, क्योंकि सीरीज 2-2 की बराबरी पर है।

करारी हार के बाद भारतीय बल्लेबाजों पर भड़के सुनील गावस्कर, बोले-उन्हें जिम्मेदारी लेनी चाहिए

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर का मानना है कि हैदराबाद में खेले गए चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में वेस्टइंडीज से मिली हार के बाद भारतीय टीम को लक्ष्य का पीछा करने के अपने तरीके में सुधार करना होगा। उन्होंने गेंदबाजों का बचाव किया, लेकिन बल्लेबाजों की क्वालिटी बढ़ाने के लिए भारतीय मानना है कि बल्लेबाजों को अधिक जिम्मेदारी लेनी होगी। भारत बुधवार को खेले गए मैच में संजू सैमसन के तेज अर्धशतक के बावजूद 248 रन के लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाया। सुनील गावस्कर ने जियोस्टार पर बात करते कहा, भारतीय टीम को सबसे पहले लक्ष्य का पीछा करने के अपने तरीके में सुधार करना होगा। भारतीय बल्लेबाजों को अधिक जिम्मेदारी लेनी होगी। अगर बल्लेबाज जिम्मेदारी नहीं निभाएंगे तो भारतीय टीम को सफलता नहीं मिलेगी। भारतीय बल्लेबाजों को इस तरह से दबदबा बनाना होगा जैसा कि लगातार दो टी20 विश्व कप जीतने वाली टीम को करना चाहिए, लेकिन इस मैच में इसकी जरा सी भी झलक देखने को नहीं मिली। गावस्कर ने आगे कहा कि श्रेयस अय्यर की अगुवाई वाली टीम को सैमसन (56) से मिली शानदार शुरुआत का फायदा उठाना चाहिए था। उन्होंने कहा, संजू ने भारत को शानदार शुरुआत दी, लेकिन बाकी बल्लेबाज इसका बिल्कुल भी

क्रिकेटर सुरेश रैना ने हैदराबाद में चौथे टी20 मैच में वेस्टइंडीज के खिलाफ मिली हार पर कहा है कि यह फॉर्मेट ही ऐसा है। इसमें 300 रन भी बन सकते हैं। टी20 सीरीज में चार मैच हुए हैं और पिछले तीन मैच तो हाई स्कोरिंग हुए हैं। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में भारतीय टीम 297 तक पहुंच चुकी है, लेकिन 300 का आंकड़ा अभी भारत को छूना है। इसी को लेकर सुरेश रैना ने कहा है कि खिलाड़ियों का माइंडसेट बदल चुका है। यह अच्छी बात भी है। सुरेश रैना रोहित शर्मा और विराट कोहली को लेकर भी बात की, जो वर्ल्ड कप 2027 खेलने की तैयारी कर रहे हैं।